धूतपापेश्वर

।। आरोग्यचिंतन ।।

पत्रिका

।। शास्त्रतत्त्वप्रकाशार्थं एषा चिन्तनपत्रिका ।।

अगस्त २०१९

AROGYACHINTAN PATRIKA

संपादकीय

प्रतिरक्षा (Immunity) और चयापचय (Metabolism) के संबधो का विस्तृत विवरण, १९ सिंतबर, २०१७ को Immunity ४७ पत्रिका में प्रकाशित लेख "Foundations of Immunometabolism and Implications for Metabolic Health and Disease", में प्राप्त होता है।

"Immunometabolism' एक महत्वपूर्ण शब्द है, जिसमे प्रतिरक्षा (Immunity) और चयापचय (Metabolism) ये दो शब्द समाए हुए है।

इन दो शब्द के परस्पर संबंधो की जानकारी साहित्य आधुनिक काल के १९ वे सदी के अंत से पाया जाता है। इसी समय चिकित्सको ने संक्रामक व्याधि और चयापचय का संबंध स्थापित किया था।

१८८४ से मेनिन्जायटिस के रुग्णों में मधुमेह के लक्षण पाए गऐ। इन लक्षणों के साहचार्य का प्राबल्य इतना ज्यादा थी कि मेनिन्जायटिस के लक्षण अनदेखे किए जाते थे और मधुमेह के प्रबल लक्षणो की चिकित्सा की जाती थी। Insulin के स्राव या कार्यप्रणाली की हानि मधुमेह का एक महत्वपूर्ण घटक है। इस तंत्र का विस्तृत विवरण १९८० के दशक में किए गए कुछ प्रयोगो के बाद ही हो पाया। यह प्रयोग श्वानों में किए गए थे। इन प्रयोगों से यह पता चला की जिन श्वानों को सीरा–negative bacteria से उत्पन्न lipopolysaccharide (LPS) से प्रभावित किया गया तब उनकें मांसपेशी में insulin द्वारा glucose uptake की क्षमता में क्षति, Insulin प्रतिरोध (resistance) पाया गया। इसी दौरान इस बात की पुष्टि हुई थी की इन्सानो में Acute Infection की वजह से रक्तस्थित Insulin का पेशिस्थित Insulin receptor के साथ संपर्क क्षमता कम होती है।

इन सारे अवलोकनों के कारण Immunometabolism क्षेत्र का जन्म हुआ। Immunometabolism यह Immunology और Metabolism के विषयों को जोडने वाला और शीघ्र से विस्तार करने वाला क्षेत्र है।

१९६३ से १९७३ के दौरान किए गए दशकीय अवलोकन के परिणाम स्वरुप, Immunometabolic व्याधियों की संप्राप्ति स्थापित हुई। संक्रमण (Infection) और चयापचय (Metabolism) का संबंध १९७३ से १९८३ के दौरान स्थापित हुआ। १९९३ तक TNF और अन्य Cytokines के संशोधनोत्तर, शोथ को उत्पन्न करनेवाले Molecular mediators के प्रमाण मिले। १९९३ से २००३ तक के प्रदीर्घ काल में विभिन्न विचार–विमर्श अनेक Signaling pathways की खोज हुई। इनही की कारण Glucose चयापचय और शोथ के बिच संबंधो की पुष्टि हुई। इसी तरह मेद धातु शोथ में Immune effector की भूमिका स्थापित हुई।

इसप्रकार Immunometabolism की संकल्पना पिछले ५ दशको के संशोधन की वजह से प्रस्थापित हुई है। इन संशोधनो पर आधारित, २०१३ से अनेक Clinical trial संचालित किए जा रहे है। जिससे Immunometabolism का महत्व प्रस्थापित होगा।

उपर दिए लेख की समाप्ती इस वाक्य से होती है। "This excellent progress should allow us to overcome the challenges of designing effective therapeutic, disease preventative strategies and provide excellent metabolic interface to improve human health."

आयुर्वेद में व्याधियों की चिकित्सा में अग्नि और ओज को प्रधान महत्व दिया है। चयापचय में अग्नि का योगदान महत्वपूर्ण है। 'रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ' यह आयुर्वेद का विख्यात सूत्र है। 'प्राकृतस्तु बलं श्लेष्मा' इस प्रसिद्ध सूत्र पर आधारित–ओज और प्राकृत कफ यह दो शरीर प्रतिकार क्षमता के महत्वपूर्ण अंग है।

जीवों मे जैविक कार्यो (Biological function) के लिए उर्जा प्रबंधन (energy management) जरुरी है। आयुर्वेद में Internal medicine को कायचिकित्सा कहा जाता है। 'काय' अर्थात् 'अग्नि को नियंत्रित करने के उपाय' यही कायचिकित्सा का अर्थ है। आयुर्वेद में 'अग्नि' को सर्वश्रेष्ठ महत्व दिया है, क्योंकि अग्नि ही चयापचय (Metabolism) का प्रेरक है, जो कि जीवन का अत्यावश्यक घटक है।

आयुर्वेद में लंघन और बृंहण, यह दो चिकित्सा प्रणाली कही गई है। यह विभाजन ऊर्जा / अग्नि प्रबंधन के सिद्धांत पर आधारित है। अग्नि का 'संरक्षण' और उसका नियमित उपयोग यह जैविक कार्य के लिए आवश्यक है। उत्क्रांती के प्रारंभिक चरण में एककोशिकीय जीवों को जीने के लिए पोषक तत्वों की ही जरुरत थी। जैसे –जैसे एक कोशिकीय जीव विकसित होकर बहुकोशिकिय जीवमें रुपांतरित हुए, उन्हें बाह्य जगत के खतरों से सामना करना पडा। पर्यावर्णीय खतरों से सुरक्षा की आवश्कता को मध्ये नजर रकते हुए प्रतिरक्षा प्रणाली का विकास हुआ। इसप्रकार चयापचय और रोग प्रतिकार शक्ति, जीव तंत्रो के महत्वपूर्ण घटक बने। प्रतिरक्षा (Immunity) और चयापचय (Metabolism) जीवन के शुरुआत से व्यापक तरीके से आपस में संबंधित है, जिसकी सीमारेखा प्राचिन है।

क्योंकी चयापचय और रोग प्रतिकार शक्ति आयु के रक्षण और संवर्धन के लिए है, इसीलिए आयुर्वेद इन्हे महत्व देता है। आयुर्वेद के प्रयोजन में, चयापचय और रोग प्रतिकार शक्ति को स्वास्थ के रक्षण और व्याधी प्रशमन में असाधारण महत्व दिया गया है। Immunity और Metabolism के संबंधो के विषय में, १९६३ से २०१३ तक २,६१,७६४ लेख लिखे गए है। इसी वजह से, हमे अभी एहसास होता है, क्यों ऋषियों ने आयुर्वेद को अनादि (beginningless), अनन्त (endless) और शाश्वत (eternal) कहा है।

वैद्य.मिलिंद पाटील

वैद्यकीय सलाहकार

विक्रम डिविजन,श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

"To lengthen thy life, lessen thy meals"

Benjamin Franklin

- by David Martin (1737-1797).
Oil on canvas, 1767.
Pennsylvania Academy of the Fine Arts, Philadelphia

Nuclear Factor κappa B: गुग्गुल कल्प में एक लक्ष्य

आयुर्वेद के विभिन्न चिकित्सीय निर्देशों में गुग्गुल कल्पों की प्रचुरता हैं। विशिष्ट गुग्गुल योग विशिष्ट व्याधिवर्गों के उपचार में पर्याप्त है। **गुग्गुल कल्प** में गुग्गुल एक प्रमुख घटक हैं।

सामान्यतः सर्व गुग्गुल कल्प का निर्देश शोथजन्य (Inflammatory) और क्षयजन्य (Degenerative) जीर्ण व्याधियाँ में किया जाता हैं। Guggulsterone गुग्गुल का जैव–सक्रिय (bio-active) घटक है। Guggulsterone का शोथहर गुण सर्वविदित है। सर्व जीर्ण एवं चयापचय संबंधी विकार जैसे की स्थौल्य, यकृत विकार, कर्करोग, व्रण, वृक्क विकार, संज्ञावह तंत्रिका (Neural), संज्ञावह तंत्रिका–पेशी (Neuro-muscular), संधी और त्वचाविकार इत्यादि में शोथ (Inflammation) यह प्रमुख रोगकारक कारण होता है।

आधुनिक विज्ञान के उन्नति से यह ज्ञात हैं कि NF-kB (Nuclear Factor Kappa B) की शोथ में प्रमुख भूमिका होती है। NF-kB का विकास बहुकोषीय जीव की अखंडता के संरक्षण में एक केंद्रीय भागीदार के रुप में हुआ है। मांस, अति मेदयुक्त, ग्रील्ड भोजन, Y – विकिरण, तंबाकू, मद्यसेवन, मानसिक ताण, H. Pylori, H.I.V., HBV और HCV जैसे विभिन्न प्रेरक कारकों से सक्रिय होकर NF-kB, शोथ के वृद्धी का कारण बनता है। हम सभी को ज्ञात हैं की शोथ शरीर का एक रक्षा तंत्र प्रणाली (Defence mechanism) है।

NF-kB का संशोधन एक बहुत रोचक घटना है। १९८२ में **डॉ. रंजन सेन** ने Organic Chemistry में डॉक्टर की उपाधी प्राप्त कर अपना अग्रसर कार्य Post-doctoral फेलो के रुप में Baltimore laboratory, Massachusetts institute of technology (M.I.T) में शुरु किया था। उन्होंने **डॉ. डेव्हिड बाल्टीमोर** (फिजियोलॉजी या मेडिसीन १९७५ नोबेल पुरस्कार विजेता प्राप्त और एक जैव रसायनशास्त्रज्ञ) के साथ एक जटील अणु NF-kB पर कार्य किया।

डॉ. रंजन सेन

डॉ. डेव्हिड बाल्टीमोर

NF-kB यह शोथकारक प्रणाली जो शरीर के चयापचय को प्रमुख रुप से प्रभावित करती हैं, उसका प्रमुख कारणीभूत घटक है। शोथकारक प्रणाली से प्रभावित शरीर के चयापचय में NF-kB एक प्रमुख कारक है क्योंकिः

- एक केंद्रीय शोथप्रणाली मध्यस्थ के रुप में कार्य करता है।
- विविध Immune receptors को प्रतिक्रिया देता है।
- निष्क्रिय NF-kB का सक्रियण, विभिन्न शोथकारक प्रणाली और चयापचय रोगों की संप्राप्ति में संयुक्त है।

इसलिए NF-kB संदेशवहन मार्ग को लक्षित करना यह शोथहर और चयापच रोगों की चिकित्सा के लिए आकर्षक दृष्टिकोन से एक उज्वल भविष्य का प्रतिनिधित्व करता है।

NF-kB कोशिका में हर समय स्थित होने के बावजूद शोथ का कारण क्यों नही बनता? क्योंकि NF-kB एक प्रतिलेखन कारक (Transcription factor) IkB kinas (IkK) complex द्वारा Macrophage के Cell Cytoplasm में नियंत्रित रखा जाता है।

IkK complex, NF-kB संदेशवहन का एक मास्टर नियामक हैं। मैक्रोफेज यह जन्मजात प्रतिरक्षा कोशिकाओं का एक बडा परिवार है जो विभिन्न उतको में स्थित हैं और संक्रमण के विरोध में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया का अग्रिम कार्य करता है। वह Phenotypically भिन्न M1 Macrophages में परिवर्तित होते है। NF-kB की सक्रियता यह M1 Macrophages की विशेषता है। सक्रिय होनेपर NF-kB विभिन्न genes के प्रतिलेखन को सक्रिय करते हुए शोथ का नियंत्रण करता है। यह शोथ में शामिल genes को लक्षित करता है और शोथकारक Cytokines, Chemokines और Adhesion Molecules केउत्पादन को बढता हैं।

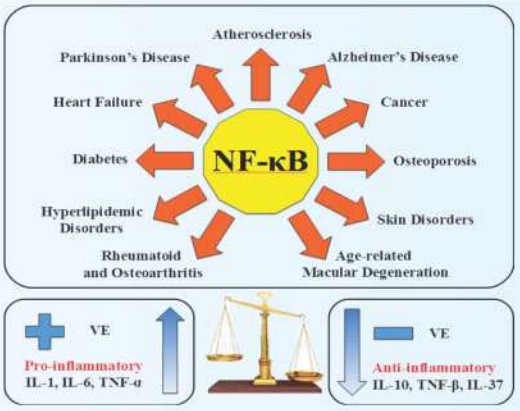

साइटोकाइन वैषम्य (Dysregulation) और NF-kB शोथजनन।

यह Cell Proliferation, Apoptosis, Morphogenesis या Differentiation को भी नियंत्रित करता है।

साइटोकाइन वैषम्य (Dysregulation) और NF-kB शोथजनन।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है की शोथ की चिकित्सा के लिए NF-kB की सक्रियता का प्रतिबंध करना आवश्यक है। Guggulsterone, जो की गुग्गुल का मुख्य घटक है, सक्रिय NF-kB का प्रतिबंधन कर शोथहर कार्य करता है।

गुग्गुल के कार्मुकता का विचार करते समय शारीरिक परिश्रम और मिताहार द्वारा जो NF-kB के प्रतिबंधात्मक माध्यम से शोथहर और Macrophage में जो कार्य होता हैं उसका संदर्भ महत्वपूर्ण है।

निम्नोक्त श्लोक में शारीरिक व्यायाम और आहार नियंत्रण के महत्व का वर्णन किया गया है।

परिश्रममिताहारौ भुगतावश्विनीसुतौ ।
तावनादृत्य नैवाहं वैद्यमन्य समाश्रये ।। हारित संहिता

परिश्रम और मिताहार से प्राप्त स्वास्थ्य लाभ, चिकित्सा शक्ति की जुडवा देवता अश्विनीकुमार की देन है। स्वास्थ्य रक्षण और संवर्धन में परिश्रम और मिताहर की यह क्षमता है। परिश्रम प्रणालीगत मेक्राफेज सक्रियण के प्रतिबंध से शोथहर कार्य करता है। परिश्रम भी एक शक्तिशाली जैविक प्रतिक्रिया है जो संदेशवहन रुपांतर कर संभावित रुप से जीर्ण व्याधी, अस्थिसंधी व्याधीयों में शोथ का नियंत्रण करता एक अपरिहार्य उपकरण बनकर, Pro-inflammatory cytokine (IL-1B, TNF-α, TL-6, IL-17, IL-12 and IL-8) अधिष्ठापन का प्रभावी रुपसे प्रतिबंध करता है। (Osteoarthritis and Cartilage 22 (2014) 557-5-48).

एक अध्ययन के अनुसार, वैकल्पिक दिन का उपवास, oxidative क्षती और NF-kB सक्रियता का प्रतिबंध कर चूहे के हृदय का वृद्धावस्थाजन्य शोथ और Fibrosis से रक्षण करता है। (Free Rabic boil med.2010, Jan1; 48(1): 47-54) परिश्रम और मिताहार के समान गुग्गुल कल्प में प्रबल चिकित्सीय सक्रियता है, जिसका उपयोग जीर्ण व्याधियों की चिकित्सा के लिए किया जा सकता है।

गुग्गुल कल्पों:

- **निम्नोक्त व्याधियों की चिकित्सा में उपयोगी वैज्ञानिक प्रमाणः**
  - शोथ
  - कर्करोग
  - मूत्रवहसंस्थान विकार
  - संज्ञावह संस्थाविकार
  - त्वचा विकार
  - मेदवृद्धि और संबंधित हृदयविकार, जैसे उच्च रक्तदाब और हृदयशूल
- Gene अभिव्यक्ति को नियमित करता है।
- Transcription Factor सहित आण्विक लक्ष्य (Molecular Targets), जैसे NF-kB Signal Transducer and Activator of Transcription (STAT), Steroid receptors पर नियंत्रण दर्शाते है।

सद्य प्रकाशित लेख "NF-kB Signaling in Macrophages: Dynamics, Crosstalk, and Signal Integration" (Frontiers in Immunology 9th April 2019), निम्नोक्त वाक्य के साथ समाप्त होता है, NF-kB Signalling यह अनुसंधान का भविष्य उज्वल संभवतः चमकदार हैं।

और इसकारण, शोथ, संधि, त्वचा की जीर्णवस्था और वसा चयापचय आदि के क्षयज विकारों के चिकित्सा में गुग्गुल कल्प के उपाययोजना की प्रासंगिकता उज्ज्वल है।

विटामिन डी और स्थौल्य का संबंध

रिकेट्स के प्रतिबंधात्मक उपाय में विटामिन डी का सहयोग यह सर्वश्रुत है। हाल ही में विटामिन डी की कार्यात्मक भूमिका और असंक्रमणशील व्याधियों के संबंध सिध्द हुए है। यह कॅन्सर, हृदयरोग, मधुमेह, विषाद (मानसिक व्याधियाँ) जैसे विभिन्न चयापचयजन्य व्याधियों के विरोधी एक संभावित रक्षक के रुप में स्पष्ट किया गया है।

अतिस्थूल व्यक्तियों में Vitamin D के निम्न स्तर के कारण अंतः स्रावी ग्रंथियों में परिवर्तन होता है, जो मेद धातू विकृती जन्य जीर्ण शोथ की उत्पती करता है। इस शोथकारक प्रक्रिया का नियंत्रण मेद धातु से उत्पन्न Adiponectin द्वारा किया जाता है। विटामिन डी Insulin sensitizing hormone (adiponectin) की अभिव्यक्ति नियंत्रित करता है। Vitamin D की कमी (< 25–30 nmol/l) और अपर्याप्तता (< 50–100 nmol/l) से जनित मेद वृद्धी के कारण Insulin resistance मधुमेह, हृद्रोग, प्राणवह स्रोतस के संक्रामक व्याधि, Autoimmune और स्थूलता जैसे बिमारीयों का खतरा बढता है।

European Society of Endocrinology पत्रिका में प्रकाशित एक लेख के अनुसार, पुरुषों और स्त्रियों में उदर पर मेद का बढता प्रमाण विटामिन डी की निम्न मात्रा निर्देशित करता है। American Journal of Laboratory Medicine में सद्य प्रकाशित–अध्ययन के अनुसार, विटामिन डी के अभाव का संबंध कोलेस्टेरॉल, ट्रायाग्लिसराइडस् और एल.डी.एल. का उच्च स्तर और एच–डी– एल के निम्न स्तर से प्रस्थापित हुआ हैं। Vitamin D, NF-kB Signalling को कम कर, Cytokine और मेद धातु शोथ की उत्पत्ती को कम करता है। Clinical trial and investigation के एक लेखानुसार स्वस्थ व्यक्तियों में सिर्फ स्थौल्य हैं तो, उनकी चिकित्सा में स्थौल्यविरोधी उपक्रम के साथ Vitamin D की पूरक मात्रा इन्सुलिन संवेदनशीलता में सुधार करती हैं।

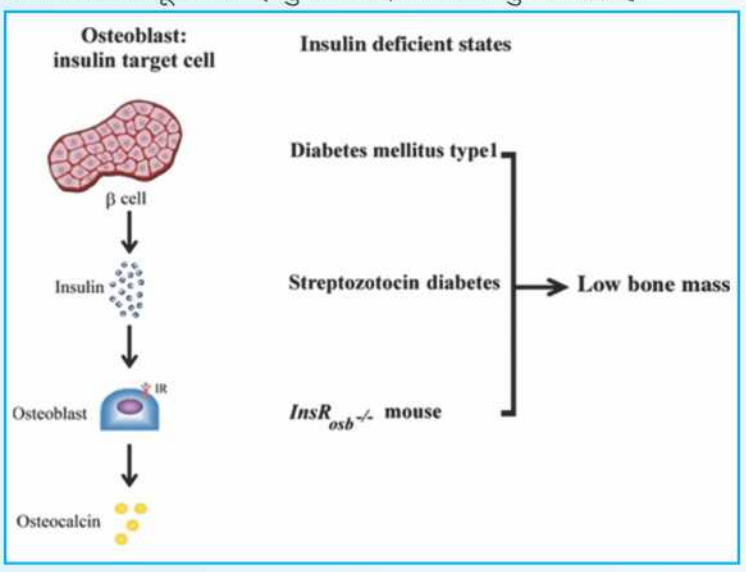

Insulin नूतन अस्थि निर्मिती और अस्थि पुर्नगठन कराकर, अस्थिवह स्रोतस् का नियंत्रण करता है। Insulin resistance या Insulin के अभाव में अस्थिक्षय और अस्थिशौषिर्य बढता है। Insulin resistance के कारण मेद धातु शोथ उत्पन्न होता है और अस्थि पुनर्गठन में विकृती निर्माण होती है।

अतः स्थूल व्यक्तियों में, Insulin resistance, मधुमेह और अस्थिशौषिर्य को कम करने के लिए, मेदधातु शोथ (Adipose tissue inflammation) निवारण यह एक आशादायक चिकित्सीय लक्ष्य हैं।

कृत्वा तु वृद्धिं समानैः धात्वग्नीन् स्थापयित्वा च।
असंशयं अस्थिक्षये जनयेदस्थिसारताम्।।

शरीर सप्त धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र) से बना हुआ

है। अस्थि यह पंचम धातु है, जिसे मेद इस चतुर्थ धातु से पोषण प्राप्त होता है। उचित रुप से पाचित भोजन सप्त धातुओं का क्रमशः पोषण करता है। रस से रक्त का, रक्त से मांस का इत्यादि।

यह आचार्य सुश्रुत ने सूत्रस्थान अध्याय १५ में बताया है।

मेदः स्नेहस्वेदौ दृढत्वं पुष्टिमस्थ्नां च

मेद धातु शरीर को स्निग्धता, अस्थियों को दृढता और वृद्धि प्रदान करता है। सप्त धातुओं में, अस्थि यह पंचम धातु है और इस धातु का पोषण उसके पूर्व मेद धातु से होता है। स्थौल्य और मधुमेह में मेदाग्नि सहित सभी धात्वग्नि मंद होती है। इसीकारण अस्थि धातु को पर्याप्त पोषण प्राप्त नहीं होता। अतः धात्वग्निवर्धन विशेषतः मेदाग्निवर्धन (Fat metabolism) की अस्थि उत्पत्ती पुनर्गठन में महत्वपूर्ण भूमिका है। अस्थिसौषिर्य यह न केवल Calcium की कमी से होता किन्तु यह चयापचय जन्य व्याधी है। अतः उसकी चिकित्सा में चयाचवय (Metabolism) का विचार करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अस्थिसौषिर्य की चिकित्सा अनेक स्तरों पर होनी आवश्यक है। जैसे रस, रक्त, मांस और विशेषतः मेदवह स्रोतस क्योंकि सुश्रुताचार्य के अनुसार अस्थिपोषण मेदधातु का कार्य है। इसलिए चिकित्सा में Calcium supplement के अलावा ऐसे घटक द्रव्य होना जरुरी है, जो मेदाग्नि और Insulin sensitivity को बढाते है।

अस्थिपोषक टॅबलेट यह जैविक कॅल्शियम पूरक और अन्य वनस्पति द्रव्य जैसे अस्थिश्रृंखला, अर्जुन, शोधित लाक्षा, आमलकी, अश्वगंधा, गुडूची, शोधित गुग्गुल, बला और बब्बूल जो Insulin sensitizer और मेदाग्निवर्धक है। अस्थिपोषक टॅबलेट के वनस्पति द्रव्य अस्थिपुनर्गठन में विटामिन डी की भूमिका निभाते है।

अस्थिपोषक टॅबलेट

प्रधान चिकित्सा उपयुक्तताः

- वार्धक्य और रजोनिवृत्ति संबंधित अस्थिसौषिर्य
- अस्थिभग्न (fractures)
- गर्भिणीअवस्था और स्तनपान के काल में कॅल्शियम अभाव

दुय्यम चिकित्सा उपयुक्तताः

- केशपतन
- नखभंग
- दंतक्षय

मात्रा एवं अनुपानः

१–२ गोलियाँ दिन में दो या तीन बार दूध के साथ

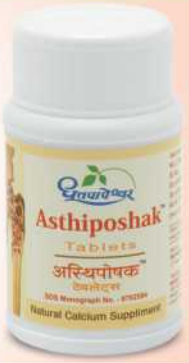

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0702594
Asthiposhak Tablets

शिशु की वृद्धि और विकास के लिए सर्वश्रेष्ठ

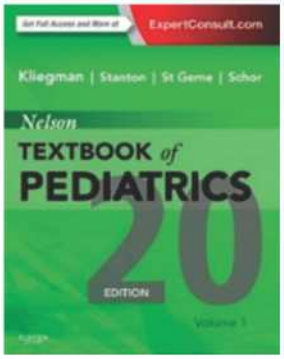

"The field of paediatrics is dedicated to optimizing the growth and development of each child"

- Nelson's Textbook of Paediatrics.

इसी प्रकार आयुर्वेद में कौमारभृत्य में ऐसा वर्णित हैं की,

कुमारस्य भरणं अधिकृत्य कृतं कौमारभृत्यम् ।

– चक्रपाणि

बार–बार होने वाले संक्रामक व्याधियों के लिए रोग प्रतिकार शक्ती की न्यूनता प्रधान कारण है। यह बार–बार होने वाली संक्रामक व्याधिया रोग प्रतिकार शक्ति को और घटाती है। यह दुष्टचक्र बच्चों के सर्वांगिण विकास में बाधा पैदा करती है।

वर्णायुःकान्तिदं श्रेष्ठं पुष्टिकृद्बलवर्धनम् ।
बालानां वह्निकृच्चैव दन्तोद्भेदगदापहम्।।

शिशुभरण रस यह एक आयुर्वेद सुपर स्पेशिलिटी औषधी है, जो शिशु की रोग प्रतिकार शक्ति और पोषण में सुधार करके शिशु की वृद्धि और विकास के लिए उपयोगी है। यह एक सामान्य टॉनिक है, जो शिशुओं में क्षुधा बढाता है। वर्ण को सुधारता है और शिशुओं की त्वचा को चमक प्रदान करता है। यह दंतोद्भेदजन्य व्याधियों मे भी लाभप्रद होती हैं।

ज्वर

श्वास

कास

संक्रमण

स्तनपान समस्या

गिलायु शोथ

कार्श्य

अग्निमांद्य

अतिसार

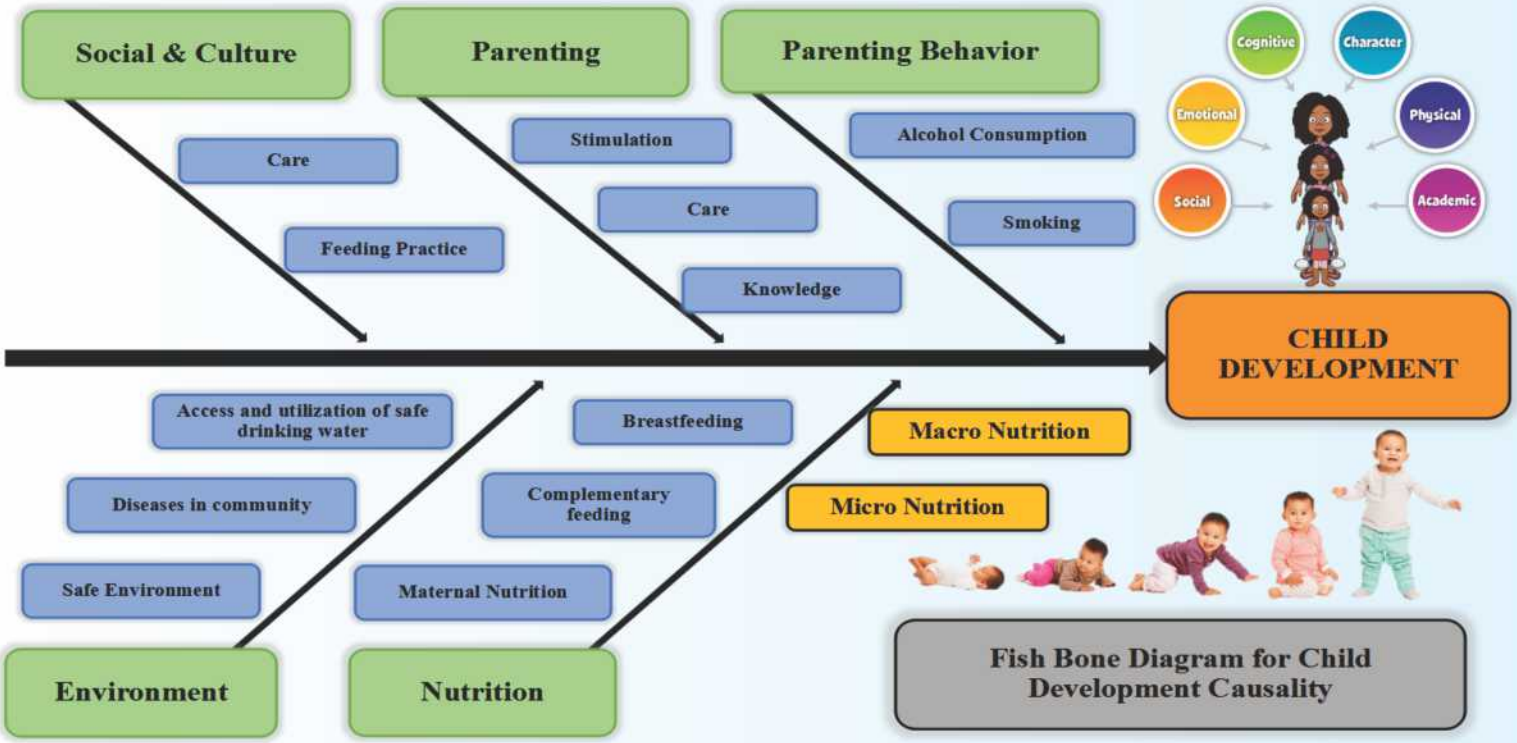

शिशुभरण रस के घटकद्रव्य

कुमारकल्याण रस

ज्वर, श्वास, कास, वमन, कामला, अतिसार, कार्श्य, अग्निमांद्य

सितोपलादि चूर्ण

श्वास, कास, क्षय, अग्निमांद्य, ज्वर

संशमनी वटी

श्रेष्ठ ज्वरघ्न औषधी, रसायन (गुडूची) व्याधिक्षमत्ववर्धक

मधुमालिनी वसंत

बलपुष्टिप्रदायकः बलमांसाग्निवर्धनः

अग्निमांद्य, दौर्बल्य, जीर्ण व्याधी, कार्श्य

द्राक्षा क्वाथ

शीत, नेत्र्य, बृंहण, तृष्णा, ज्वर, श्वास, कामला, शोष

शिशु भरण रस™

शिशुओं के सर्वांगीण वृद्धि और विकास के लिए श्रेष्ठ

शिशु भरण रस से निम्नोक्त लाभ होते है।

- शिशु की उचित वृद्धि
- शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास
- दृढ बलवान् और बेहतर व्याधिक्षमत्ववर्धन
- अन्नवह स्रोतसके विकारो में अग्निवर्धन
- ज्वर, अतिसार, प्रतिश्याय, कास, अरुचि, क्षुधानाश जैसे दंतोद्भेदजन्य व्याधियों से मुक्ती

सितोपलादिचूर्णं च तथा संशमनी वटीम्।
कुमारकल्याणयुक्तं मधुमालिनी संयुतम्।।
द्राक्षाक्वाथेन भावितः शिशुभरणरसः स।
वर्णायुः कान्तिदं श्रेष्ठं पुष्टिकृद्बलवर्धनम्।
बालानां वह्निकृच्चैव दन्तोद्भेदगदापहम्।।

अनुभूत

- कास
- अग्निमांद्य
- अस्थिक्षय, अस्थिमार्दव, अस्थिवक्रता,
- अतिसार, मलावष्टंभ, छर्दी
- मांसधातुक्षय
- कार्श्य

वय		मात्रा एवं अनुपान
२ वर्ष तक	:	१ गोली, मधु के साथ, दिन में १ बार
२ से ५ वर्ष तक	:	१ गोली गोघृत के साथ, दिन में २ बार
५ वर्ष के उपर	:	२ गोली, गोदुग्ध के साथ, दिन में २ बार

सेवन विधी टिपणी : गोली शिशु को देने से पहले पिसकर देनी चाहिए।

उपलब्धताः ३० टॅबलेट्स (ब्लिस्टर पॅक)

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902634
Shishu Bharan Rasa

ग्रहणी की अनकही व्यथासे पीडित।

'"Global Burden of Diseases, Injuries, and Risk Factors Study (GBD)" के अनुसार, अतिसार एक वैश्विक समस्या है और सर्व आयु के व्यक्तियों में मृत्यु का ८ वा प्रमुख कारण है। विश्व में अतिसार १.६ अब्ज से अधिक मृत्यु के लिए कारणीभूत होता है।

अन्नवहस्रोतस् की व्याधियों में अतिसार और प्रवाहिका सर्व सामान्य लक्षण है। यह लक्षण रुग्णों के दिनचर्या में बाधा उत्पन्न करते है और बहुत बार शर्मदायक भी होते है। सभी उम्र के लोग इन लक्षणों से ग्रस्त होते है। सामान्य चिकित्सक के पास आने वाले रुग्णों में सबसे सामान्य लक्षण अतिसार और प्रवाहिका होते है। Bacteria और Virus जैसे विषाणू इन लक्षणों के लिए प्रमुख आगन्तुज हेतू है।

Bacteria और Virus के मिश्रित संक्रमण के परिणामस्वरुप शरीरक्रिया में परिवर्तन होते है जिस कारण द्रवरुप मलप्रवृत्ति होती है।

तथापि, अतिसार और प्रवाहिका दोनों ही स्वयंसीमित (Self-limiting) लक्षण है, जो समय अनुसार अपने आप शांत होते है। इस तथ्य को अष्टङ्गहृदय में अच्छी तरह से वर्णित किया है।

दोषाः सन्निचिता ये च विदग्धाहारमूर्च्छिताः।।
अतिसाराय कल्पन्ते तेषूपेक्षैव भेषजम्।
भृशोत्क्लेशप्रवृत्तेषु स्वयमेव चलात्मसु।।
न तु सङ्ग्रहणं योज्यं पूर्वमामातिसारिणि। – अष्टङ्गहृदय ९ /२–४

यह सूत्र आंत्र की गती रोकने वाले औषधियों के परिवर्जन के महत्व को दर्शाता है। स्तंभन न देने से व्याधिजन्य विषाणु द्रवमल के साथ शरीर के बाहर निकल जाते है।

माधव निदान ने अतिसार के हेतुओं को बाह्य और अभ्यंतर बताया है:

संशम्यांपां धातुरग्निं प्रवृद्धः शकृन्मिश्रो वायुनाऽध प्रणुन्नः।
सरत्यतीवातिसारं तमाहुर्व्याधिं घोरं षड्विधं तं वदन्ति।। – माधव निदान

माधव निदान ने वर्णन किया है कि, सामान्यतः अतिसार के लिए बाह्य कारण विष और कृमि हैं, परंतु आंतरिक कारण अग्निमांद्य है। अग्निमांद्य के कारण बाह्य घटक शरीर को दुष्प्रभावित करते है और परिणामतः द्रवरुप मलप्रवृत्ति होती है।

संतुलित अग्नि इन बाह्य रोगकारक घटको को शरीर के आंतरिक वातावरण को प्रभावित नही होने देता। यह तथ्य वर्तमान शोध निष्कर्षों की पुष्टी करता है– जैसे बाह्य सूक्ष्मजीवों को एकत्रित होकर धातुओं पर आक्रमण करने की क्षमता (Anti-adhesion activity) को कम करना; जीवाणुओं की संदेशवहन प्रक्रिया (Anti-quorum sensing activity) का प्रतिबंध करना और आंत्र पर रोगकारक जीवाणुओं का एकत्रित आक्रमण (Anti-biofilm formation activity) का प्रतिबंध कर आंत्र को रोगाणुओं के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करना।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में Antibiotics का उपयोग किया जाता है, जो व्याधिजनक विषाणुओं को आंत्र के अंदर मार देते है। परंतु यह निर्दशन में आया है कि आंत्र संक्रमण की चिकित्सा के लिए Antibiotics के वारंवार उपयोग से विषाणु में Antibiotics resistance की उत्पत्ती होती है। यह Antibiotics virus के विरोध में प्रभावी नहीं होते है इसीलिए अतिसार और प्रवाहिका की चिकित्सा में बहुत कम सहायता करते है।

सामान्यतः चतुर विषाणु Antibiotics को निष्प्रभ कर देते हैं, जिसे Antibiotics resistance की संज्ञा से जाना जाता हैं। संक्रमण के प्रतिकार में प्राचीन ज्ञान कभी पराजित नहीं होता है। अतिसार और प्रवाहिका की प्रभावी चिकित्सा, Antibiotics बिना की गई है। इतिहास दर्शाता है की १९७० में बांगलोदश में हुए Cholera जनपदध्वंस में बिना Antibiotics के सिर्फ तण्डुल मण्ड के प्रयोग से अनेक अतिसार पीडित रुग्णों को राहत मिली थी।

इसलिए अतिसार, प्रवाहिका और I.B.S. (Irritable Bowel Syndrome) को आयुर्वेदिय औषधियों के उपयोग से प्रभावी रूप से प्रतिबंध कर सकते हैं।

कुटज पर्पटी टॅबलेट, कुटज, मुस्ता, शंख भस्म और कुटज पर्पटी का उत्तम संयोजन है। यह कल्प आयुर्वेद शास्त्रीय ग्रंथो में वर्णित सिद्धांतो को ध्यान में रखते हुए, अग्नि की रक्षा, अतिसार और प्रवाहिका रोगकारक घटकों का विरोध करने हेतु परिकल्पित किया गया है।

2016 में Microbial Pathogenesis नामक पत्रिका में प्रकाशित लेख के अनुसार Holarrhena antidysentrica (कुटज) में anti-adhesion, anti-quorum sensing और anti-biofilm कार्य पाए गए है। ये संशोधन कुटज के कार्य प्रणाली को सिद्ध करते है, जिसका उपयोग अतिसार और प्रवाहिका में सदियों से किया जा रहा है। कुटज के उपरोक्त गुण, रोगजनकों को आंत्र की संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता को भंग करने से प्रतिबंध करते है।

Cyprus rotundus मुस्ता के मेथनॉल अर्क ने २५० और ५०० मि.ग्रा. प्रति कि. ग्राम शरीर भार की मात्रा में सेवन करने से मूषको में एरंड तेल से प्रेरित अतिसार के विरुद्ध Anti-diarrhoeal कार्य दर्शाया है। (Caddin et al 2006)

मुस्तं साङ्ग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम्।

मुस्ता अतिसार में विषाणुरोधी (Antibacterial) कार्य के साथ ऐंठन (Spasm) से मुक्ति देता है। मुस्ता का दीपन – पाचन कार्य अग्निवर्धन करता है, जो Microbial संक्रमण को रोकने में सहाय्य करता है।

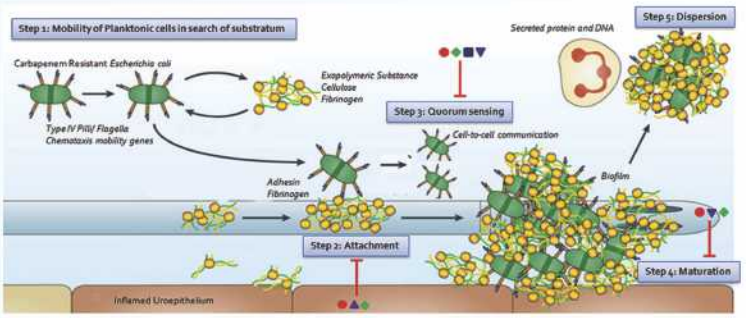

PTRC-2111-A (*Berberis aristata*)
PTRC-31911-A (*Camellia sinensis*)
PTRC-31811-A (*Cyperus rotundus*)
PTRC-8111-A (*Holarrhena antidysenterica*)
*PTRC-11611-A (*Andrographis paniculata*) didn't show any significant inhibitory activity (not shown here)

Natural Plant Product	Anti-Adhesion Activity	Anti-Quorum Sensing Activity	Anti-Biofilm formation Activity
PTRC-2111-A (*Berberis aristata*)	91.3%	96.06%	51.3%
PTRC-31911-A (*Camellia sinensis*)	84.1%	90.5%	≥ 30%
PTRC-31811-A (*Cyperus rotundus*)	48.5%	90.5%	≤ 15%
PTRC-8111-A (*Holarrhena antidysenterica*)	55.2%	96%	≥ 30%

ग्रंथो में पर्पटी का कार्य 'ग्रहणीगजमर्दनदक्षतरा' के रुप में वर्णित है। यह ज्ञात हैं कि ग्रहणी के चिकित्सा में पर्पटी योगों का उपयोग सर्वश्रेष्ठ है क्योंकी वे ग्रहणी को शक्ति प्रदान करते है।

इसप्रकार, कुटज पर्पटी वटी के उपरोक्त कार्यों के बल पर अतिसार, प्रवाहिका I.B.S जैसे लक्षणों पर एक प्रभावशाली उपाय है। यह अन्नवह स्रोतस् को मजबूत करने और रोगजनक घटको के संकट को रोकने में सहाय्यक है।

घटकद्रव्य	गुणधर्म
कुटज पर्पटी	**ग्रहणीगजमर्दनदक्षतरा। (पर्पटी)**
कुटज	**कुटजत्वक् श्लेष्मपित्तरक्तसाङ्ग्राहिकोपशोषणानाम्।**
मुस्ता	**मुस्तं साङ्ग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम्।**
शंख भस्म	**हिमः शीतो लघु पित्तकफास्रजित्।**

कुटज पर्पटी वटी का चिकित्सीय प्रयोग

उपयुक्तता	अतिसार, प्रवाहिका, ग्रहणी (अतिसारयुक्त I.B.S.)
मात्रा	१ से २ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार
अनुपान	कुटजारिष्ट, जीरकाद्यारिष्ट, तक्र अथवा कोष्ण जल के साथ

श्रेष्ठतम चारों का उपयोग करें....
Antibiotic Resistance को रोके।

"Journal of the Pediatric Infectious Diseases Society" में प्रकाशित एक नए अध्ययन के अनुसार श्वसनलिका शोथ से पीडित शिशुओं में सामान्यतः अनावश्यक Antibiotic के प्रयोग के कारण दुष्प्रभाव (Side effects और Adverse reactions) निर्माण हो सकते है। Antibiotic जैसे शस्त्र जो संक्रामक व्याधियों में परिणामकारक तो है, परंतु चिकित्सा में दुरुपयोग के कारण वे कुंठित होते है और व्याधी के पुनरुद्भव को रोकने में सहायता प्रदान नही करते।

ढाल तलवार से शक्तिशाली होती है।

इसीलिए, इस काल की यह जरुरत है की, हम ऐसी चिकित्सा पद्धती अपनाए जो सदियों से प्रचलित हो और जो आगंतुज विषाणुओं के प्रति रक्षा प्रदान करे। जब शिशुओं के स्वास्थ्य का प्रश्न हो तो उन्हे तलवार के बजाय ढाल प्रदान करने में ही समझदारी है। चिकित्सा प्रणाली जो विषाणुओं के खिलाफ बच्चों की रोग प्रतिकार शक्ती को बढावा देती हो, सभी स्रोतसों को रचनात्मक और क्रियात्मक स्वास्थ्य प्रदान करती हो और इसकारण बच्चों को सुदृढ बनाती हो, ऐसी चिकित्सा बालरोग (Paediatrics) में आदर्श मानी जाती है। आयुर्वेद ने शिशुअवस्था में शिशु के स्वास्थरक्षण को सर्वोच्च महत्व दिया है। स्वस्थ शिशुकाल एक स्वस्थ किशोरावस्था और रोगमुक्त वार्धक्य के लिए मूलाधार है। सर्वदा 'स्वास्थ्य रक्षण' यह आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य रहा है।

स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनम्।

आंतरिक स्वास्थ्य के संरक्षणार्थ शरीर के बाह्य रोगकारक घटकों से संरक्षण करना आवश्यक है। बाह्य वातावरण **लोक** है और शरीर **पुरुष** है। प्राण-अन्न-उदकवह स्रोतस् के माध्यम से **लोक** और **पुरुष** एक-दूसरे से संपर्क में आते है। **'लोक'** और **'पुरुष'** इन स्रोतसों के माध्यम से एक दूसरे पर प्रभाव डालते है। शरीर की यह दो प्रणालियाँ अर्थात् प्राणवह और अन्नवह स्रोतस्, बाह्य वातावरण के सीधे संपर्क में आती है, ॲलर्जी और संक्रमण के आक्रमण का शिकार होती है।

बाह्य कारकों के कारण व्याधियों को प्रतिरोध करने के लिए इन दोनों स्रोतसों की संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता निरंतर रखना आवश्यक है। बाह्य पर्यावरणीय घटक जैसे Allergen, प्रदूषक, संक्रमण, परिवर्तनशील तापमान, आंतरिक स्वास्थ्य को बाधित करते है और व्याधिनिर्माण का कारण बनते है।

'Immune system' नामक रक्षा प्रणाली, मानव शरीर में सहज/जन्मजात होती है, जो उसे बाह्य रोगकारक हेतुओं से रक्षा प्रदान करती है।

शिशु इन बाह्य पर्यावरणीय संक्रमणों के संपर्क में श्वसन या अन्नमार्ग से आते है और प्रतिश्याय, उदरशूल, अतिसार, आदि लक्षणों से संक्रमित हो जाते है। इन सामान्य संक्रमणों का विरोध करने के लिए शिशु की रोग प्रतिकार शक्ती पर सतत दबाव रहता हैं। इसीलिए श्वसन और अन्नवह स्रोतस् संबंधी सामान्य संक्रमणों के उपचार हेतु शिशु की रोग प्रतिकारशक्ती (Immunity) को सशक्त बनाना वास्तव में समय की आवश्यकता हैं।

श्रेष्ठतम चार के साथ अपने शिशु की रोग प्रतिकार शक्ती को बढाए।

बालचातुर्भद्रिका सिरप चार औषधियों का एक कल्प है। पिप्पली, कर्कटश्रृंगी, मुस्ता और अतिविषा यह द्रव्यों का उपयोग प्राणवह और अन्नवह स्रोतस् की रक्षा करने के लिए किया गया है।

पिप्पली और कर्कटश्रृंगी प्राणवह स्रोतस् की रक्षा करते है, मुस्ता और अतिविषा अन्न और उदकवह स्रोतस् की रक्षा करते हैं।

श्वासकासज्वरहरा वृष्यामेध्याऽग्निवर्धिनी।
जीर्णज्वरोऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुडपिप्पली।
कासाजीर्णारूचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत्।।

प्राणवह स्रोतस् के विकारों की चिकित्सा में पिप्पली को पारंपरिक रूप से बहुत प्रभावी माना जाता है। पिप्पली को एक रसायन के रूप में विशेषतः प्राणवह स्रोतस् के रसायन रूप में वर्णित किया हैं।

शृङ्गी कषाया तिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान्।
श्वासोर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारूचिर्वमीन्हरेत्।।

कर्कटश्रृंगी शिशुओं के सामान्य व्याधियों के आदर्श औषधियों में से एक हैं। उपरोक्त सूत्र कास, प्रतिश्याय, श्वास आदि श्वसनमार्ग संक्रमण के लक्षण और प्राणवह स्रोतस् पर इसके सुरक्षात्मक प्रभाव का वर्णन करता है। कर्कटश्रृंगी का प्राणवह स्रोतस् पर संरक्षात्मक कार्य, आधुनिक संशोधन से सिद्ध होता है।

मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम्।
कषायं कफपित्तास्रतृड्ज्वररूचिजन्तुहृत्।
मुस्तं साङ्ग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम्।।

संग्रहण, दीपन और पाचन पचनक्रिया के तीन अंग है। अस्वास्थ्यकर आहार के कारण शिशुओं का पाचन तंत्र दुष्प्रभावित होता है। जिस वजह से अन्नवह स्रोतस् की अभ्यंतर रचना बाधित होती है और फिर विषाणुओं का संक्रमण होता है। मुस्ता एक ऐसा द्रव्य है, जो उपरोक्त तीनो कार्य करने की क्षमता रखता है। इसी वजह से पाचन संस्थान का कार्य और रचना पुनः स्थापन करके स्वास्थ्य को बढाता है।

विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत्।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन्।
अतिविषादीपनीयपाचनीयसाङ्ग्राहिकसर्वदोषहराणाम्।।

अतिविषा, दीपनी, पाचनी, संग्राही और कृमिघ्न होने के कारण पाचन संस्थान की संरक्षणीय और चिकित्सा के दृष्टिकोन से ध्यान रखती है।

इन चार अत्यंत गुणकारी घटक द्रव्यों से संयुक्त बालचातुर्भद्रिका सिरप, शिशुओं को प्राणवह और अन्नवह स्रोतसों के व्याधियों से संरक्षण प्रदान करनेवाली सुरक्षित औषधी है।

बालचातुर्भद्रिका सिरप के निंरतर उपयोग से निचे दिए स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते है।

बालचातुर्भद्रिका सिरप के लाभः

- शिशुओं की रोग प्रतिकार शक्ती सशक्त करना
- संक्रमण (Infection) का प्रतिबंध और निर्मूलन
- लक्षणों की अवधि और गंभीरता में कमी
- व्याधि का पुनरुद्भव का प्रतिबंध
- जटिल अथवा नये संक्रमण का प्रतिबंध
- Antibiotic, ज्वरघ्न औषधी उपयोग की आवश्यकता में कमी
- आपत्कालीन विभाग के दौरे/अस्पताल में प्रवेश की आवृत्ती संख्या में कमी
- स्कूल अथवा कार्यालयीन कार्य की हानि में कमी

शिशुओं की व्याधियो में बालचातुर्भद्रिका सिरप का उपयोग अनावश्यक Antibiotics से बचने के लिए किया जाता है।

शिशुओं को सशक्त रोगप्रतिकारक शक्ति के साथ संक्रमण का विरोध करने दे।

अम्लपित्त मिश्रण के Ellagic Acid से अम्लपित्तपर जीत

H. Pylori संक्रमण की संप्राप्ति

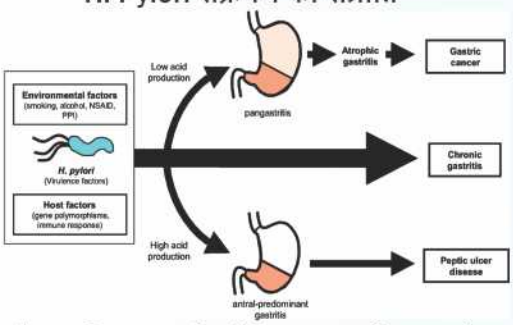

आधुनिक भागदौड भरी जीवनशैली में अम्लपित्त (Hyperacidity) एक बढता हुआ उपद्रव बन गया है। Curry, Hurry और Worry सीधे अम्लपित्त से संबंधित है। आराम की कमी, सदोष आहार पध्दती, धूम्रपान, तम्बाकूसेन, मद्यसेवन और मानसिक तनाव के परिणामस्वरुप अधिकतम लोग अम्लपित्त के रुग्ण हो रहे है। अम्लपित्त यदि जीर्ण हो जाए तो आमाशय व्रण (Ulcer) जैसे व्याधियों मे परिणत होता हैं। अम्लपित्त के सामान्य कारणों को सभी लोग अच्छी तरह से जानते है। संशोधन से यह साबित हुआ है की E. coli, E. histolytica और H. pylori जैसे रोगाणु अम्लपित्त में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

विरूद्धाध्यशनाजीर्णादामे आमे च पूरणात्।
पिष्टान्नामपक्वानां मद्यांना गोरसस्य च।।
गुर्वभिष्यन्दिभोज्यानां वेगानां धारणस्य च ।
अत्युष्णस्निग्धरुक्षाम्लद्रवाणामतिसेवनात् ।। – काश्यप संहिता

काश्यप संहिता में वर्णित अम्लपित्त के हेतू H.Pylori के समृद्ध स्रोत हैं। H.Pylori का संक्रमण अम्लपित्त का कारण है। इसके अलावा, अम्लपित्त में मद्य, अत्युष्ण द्रवसेवन की वजह से आमाशय के श्लैष्मिक स्तर को क्षति होती है। क्षति ग्रस्त श्लैष्मिक स्तर H. pylori के संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील हो जाते है।

विड्भेदो गुरूकोष्ठत्वमम्लोत्क्लेशः शिरोरूजा।
हृच्छूलमुदराध्मानमंगसादोऽन्त्रकूजनम्।।
कण्ठोरसी विदह्येते रोमहर्षश्च जायते।। – काश्यप संहिता

काश्यप संहिता में अम्लपित्त के यह लक्षण H. Pylori के सामान्य लक्षण जैसे उदरशूल, उत्क्लेश, अग्निमांद्य, वारंवार उद्गार, आध्मान, अधिजठर शूल आदि के साथ साम्य दर्शाते है।

H. Pylori संक्रमण की चिकित्सा antibiotics औषधियों से की जाता है। किन्तु, बार–बार उपयोग के कारण, यह रोगाणु antibiotics के खिलाफ प्रतिरोध निर्माण करते है और antibiotics को निष्क्रिय करते है। इसे Antibiotic resistance के नामसे जाना जाता है। व्याधी जीर्ण होने पर, लाक्षणिक चिकित्सा से उपशय प्राप्त नहीं होता ऐसे समय सर्वव्यापक चिकित्सा दृष्टिकोन की आवश्यकता होती है।

Journal of Antimicrobial Chemotherapy 2018 में प्रकाशित एक अध्ययन में, मनुष्यों में H. Pylori से निर्मित Gastro-duodenal व्याधियों के विरोध में Ellagic acid की निवारक और चिकित्सीय क्षमता का प्रमाण मिलता है।

अम्लपित्त मिश्रण के नियमित सेवन से अम्लपित्त (Hyperacidity) में त्वरित और दीर्घ समय तक उपशय मिलता है। त्रिफला यह Ellagic acid का एक समृद्ध स्रोत है जिसमें H.pylori नाशक गुणधर्म है। इसी तरह गुडूची, यष्टिमधु और पटोल जैसी द्रव्य Ellagic acid से युक्त है। Ellagic Acid से H. Pylori का निर्मूलन होता हैं।

शौक्तिक भस्म, आमाशयिक अम्लस्राव को प्रभावहीन करता है। योगरत्नाकर ने **'पाचनं तिक्तबहलं पथ्यं च परिकल्पयेत्'** का उल्लेख किया है और अम्लपित्त की चिकित्सा में तिक्त द्रव्यों के उपयोग का निर्देश दिया है। अम्लपित्त मिश्रण के अन्य घटक द्रव्य पित्तपापडा, निंब, वासा और चिरायता Mucosal lining और Epithelial tissue को दुरुस्त करते है। अतः Curry, Hurry and Worry से दूर रहे और अम्लपित्त मिश्रण के नियमित सेवन से अम्लपित्त को दूर रखे।

ॲसिड से आमाशय में पीडा होती है और इसके उपचार वृक्कों को नुकसान पहुँचाते है।

Peptic ulcer (PU), आमाशय के सामान्य व्याधि में से एक है। यदि PU का उपचार नहीं किया गया तो वह Perforation और कैंसर जैसी गंभीर व्याधियों में परिवर्तित हो सकता है, जो भविष्य में घातक है। इसलिए PU का शीघ्र उपचार आवश्यक है। इस स्थिति की कल्पना करे की व्याधि तो गंभीर हैं ही किन्तु उपलब्ध चिकित्सा और भी घातक है। इस स्थिती का वर्णन 'आसमान से टपका खजूर में अटंका' इस वाक्यांश द्वारा प्रतित होता है। PU के वर्तमान चिकित्सा का बडी जनसंख्या के स्वास्थ्य को धोका है। अतः तत्काल योग्य उपय योजनाओं की जरुरत है। अम्लपित्त आमाशय को कष्ट देता है और उसकी चिकित्सा किडनी को। एसिड पेप्टिक विकारों के आधुनिक चिकित्सा में Proton pump inhibitor (PPI) का समावेश है। हाल ही में प्रकाशित, University of Buffalo में हुए संशोधन के अनुसार एक आश्चर्यजनक सत्य प्रकट होता है। इस अध्ययन में Proton pump inhibitor (PPI) और वृक्क रोग के संबंध दर्शाए गए है। सह लेखक डेविड जैकब ने कहा हैं की P.P.I. के बढते वैश्विक उपयोग के कारण, P.P.I. और वृक्क व्याधियों के संबंधो से स्वास्थ्य प्रणाली और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर वित्तिय भार उत्पन्न हो सकता है।

आधुनिक चिकित्सा पध्दती में Intragastric acidity विरोधी या Pro-mucosal healing agent का समावेश है। यह चिकित्सा व्याधि विरोधी न होकर लाक्षणिक है, अतिरिक्त है और इसमें व्याधि निवारण दृष्टिकोन नही है।

आदर्श उपचार पध्दती लक्ष्योन्मुख होनी चाहिए और इसके परिणाम के प्रमाण होने चाहिए।

Acid peptic विकारों के चिकित्सा के अपेक्षित परिणाम निम्नलिखित है।

- **प्राथमिक परिणाम :** गॅस्ट्रिक पी.एच. में सुधार, व्याधि लक्षणो का अपुनर्भव, भूख और पाचन में सुधार एवं व्याधि के लक्षणों को कम करना या नष्ट करना जैसे Acid regurgitation, उदरदाह, उदरशूल इत्यादी
- **द्वितीय परिणाम के उपाय** : बिना दुष्प्रभाव के सर्वोत्तम कार्य प्रदान करना एवं सामान्य जीवनशैली का स्तर बनाए रखें

पित्तशेखर रस यह कल्प निम्नलिखित काष्ठौषधी और खनिज औषधियों का संमिश्रण है जिसकी योजना इन चिकित्सा परिणाम उपायों को पूर्ण करती है जो Acid peptic व्याधी के सभी लक्षणों पर मात करता है।

सूतशेखर रस	धत्तुरासे प्राप्त हायोसायमाइन, उदरशूल, Peptic Ulcer, Irritable bowel syndrome – अग्न्याशयशोथ आदि में उपयुक्त
बिल्व मज्जा	पित्तशामक, H. pylori नाशक, आमाशय संरक्षक
आरग्वध मज्जा	पित्तस्राव को कम करता है, श्लेष्मल स्तर की सुरक्षा
कालमेघ	दीपन, पाचन, पित्तशमन
शंख, शौक्तिक, कपर्दिक भस्म	अम्लपित्तहर, पित्तशामक, कॅल्शियम कार्बोनेट का समृध्द स्रोत
अविपत्तिकर चूर्ण	अम्लपित्त, परिणामशूल में लाभप्रद
भूम्यामलकी क्वाथ भृंगराज स्वरस	आमाशय श्लेष्मलस्तर की सुरक्षा, H. pylori नाशक

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
स्वास्थ्य सेवा विभाग
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाडी, मुंबई- ४०० ००४.
फोन : ९१-२२-६२३४ ६३०० फॅक्स :९१-२२-२३८८ १३०८
ई-मेल : healthcare@sdlindia.com
वेब साईट : www.sdlindia.com

केवल पंजीकृत चिकित्सक, अस्पताल या प्रयोगशालाओं के लिये
© All Copy Rights Reserved